# तारा-शिशु

एक बार एक चीड़के जंगलसे होकर दो गरीब लकड़हारे अपने घरकी ओर जा रहे थे। जाडेका मौसम था और रातका वक्त। धरतीपर और पेड़की शाखोंपर बरफ बिछी हुई थी और उनकी पगडण्डीके दोनों ओरकी झाड़ियोंकी कोपलें पालेमें ठिठुर रही थीं। पानकी पहाड़ीकी निर्झरिणी ठंडसे जम गई थी क्योंकि बर्फके राजाने उसे चूम लिया था।

इतनी ठण्डक थी कि चिड़ियाँ और जानवर भी परेशान थे।

"उफ" पूँछ दबाये हुए भेड़ियेने कहा—"कितना तकलीफदेह मौसम है। सरकार इसका ध्यान क्यों नहीं रखती ?"

"टुवी ट्विट !" हरी लिनेट चिड़ियाने कहा—"बुड्ढी धरती मर गई है और उन्होंने उसे कफन ओढ़ा दिया है।"

"नहीं—धरतीका ब्याह होनेवाला है और लोगोंने उसे शादीकी पोशाक पहना दी है।" गौरैयोंने एक दूसरेसे कहा। उनके पाँव ठण्डसे जम गये थे मगर वे सदा हर परिस्थितिको रोमाण्टिक दृष्टिकोणसे देखती थीं।

"ऊँह, बिलकुल गलत !" भेड़िया गुर्राया—"मैं तुमसे कह रहा हूँ कि यह सब सरकारकी गलती है, और अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगी तो मैं तुम्हें खा डालूँगा !" भेड़िया जरा राजनीतिज्ञ था और बहसमें दलीलोंकी कभी उसे कमी नहीं पड़ती थी।

"जहाँ तक मेरे विश्वासका सवाल है," उल्लू बोला, जो कि पूरा दार्शनिक था—"मैं विज्ञान आदिकी कोई जरूरत ही नहीं समझता।

अगर एक चीज ऐसी है तो ऐसी है, और इस वक्त सर्दी पड़ रही है, इसलिए पड रही है !"

सर्दी तो खैर थी ही। गिलहरियाँ अपनी पूँछ फटकार-फटकार कर ठण्डक भगानेकी कोशिश कर रही थी और खरगोश अपने बिलमे घुसकर बैठ गये थे।

बर्फपर नाल जडे हुए जूते रखते हुए और फूँक-फूँककर अँगुलियाँ गरम करते हुए दोनो लकड़हारे चलते गये। एक बार वे एक गड्ढेमे गिर गये और जब वे निकले तो इतने सफेद हो गये थे जैसे आटेकी पनचक्की-का मजदूर। दूसरी बार वे फिसले और उनकी लकड़ीका गट्ठर खुल गया; और एक बार उन्हे लगा जैसे वे रास्ता भूल गये हैं। वे बेहद घबड़ा गये क्योकि वे जानते थे कि बर्फ कभी पथभूलेपर दया नही दिखलाती। मगर उन्हे सन्तमार्टिनपर भरोसा था जो मुसाफिरोकी मदद किया करते है। वे लकड़हारे फिर घूमे और आखिरकार जब वे जंगलके किनारे पहुँचे तो उन्हें अपने गाँवकी रोशनी दीख पडी।

वे अपनी मुसीबतके छुटकारेसे इतने खुश हो गये कि धरती उन्हें चाँदीका फूल लगने लगी और चाँद सोनेका फूल!

मगर खुश हो चुकनेके बाद वे उदास हो गये क्योकि उन्हें अपनी गरीबीकी याद आ गई और एकने दूसरेसे कहा—"हम क्यों खुश हुए जब हमे मालूम है कि दुनिया अमीरोके लिए है! अच्छा होता हम ठण्डसे अकड़ गये होते या कोई जंगली जानवर हमे खा गया होता !"

"सच है !" उसके साथीने कहा, "कुछ लोगोके पास धनकी बहुतायत है और कुछ लोग भूखो मरते है। दुनियापर आज अन्यायका राज है !"

मगर जब वे आपसमें खड़े हुए बातें कर रहे थे तो एक अजब-सी घटना घटी। आसमानसे एक बहुत चमकदार और खूबसूरत तारा टूटा। वह एक ओरसे फिसलते हुए एक झाड़ीके पिछवाडे बीस कदमकी दूरीपर गिर पड़ा।

"लो ! यह तो सोना बरस रहा है।" वे दोनो चीखे और दौड़ पड़े। वे सोनेके लिए इतने उत्सुक थे।

उनमेंसे एक अपने साथीके मुकाबिलेमे जल्दी पहुँच गया। वह झाड़ियाँ चीरता हुआ वहाँ पहुँचा तो देखा कि सचमुच सफ़ेद बरफपर कोई सोनेकी चीज़ पडी थी। वह झुका और उसने हाथसे उसे छुआ। वह एक लबादा था जो सोनहले तारोंसे बुना था और उसमें सलमें सितारे जडे थे। उसने अपने साथीको भी पुकारा और जब वह आ गया तो दोनोंने मिलकर लबादेके बटन खोले ताकि वे सोनेका हिस्सा-बाँट कर लें। मगर अफ़सोस न उसमें सोना था, न चाँदी थी, न कोई खजाना था, महज़ एक छोटा-सा, भोला-सा बच्चा उसमें सो रहा था।

और उनमे-से एकने कहा—"लो! हमारी सभी आशाओंपर पानी फिर गया। भला बच्चेसे हमे क्या फायदा? इसे छोडकर चुपचाप घर चले चलो! हम खुद अपने ही बच्चोंके लिए खाना नही जुटा पाते है।"

मगर उसके साथीने जवाब दिया—"नही, यह तो बडी खराब बात है कि हम बच्चेको यहीं बर्फमे गलनेके लिए छोड दें। मै भी ग़रीब हूँ और मेरे यहाँ भी खाना कम है खानेवाले बहुत, मगर फिर भी मै इसे घर ले जाऊँगा और मेरी स्त्री इसे और पालेगी।"

उसने बडे नरम हाथोंसे बच्चेको उठा लिया और उसके चारो ओर लबादा लपेट दिया ताकि उसे सरदी न लग जाय और घरकी ओर चल दिया। उसका साथी रास्ते भर उसकी मूर्खता और भावुकतापर ताज्जुब करता रहा।

और जब वे गाँवके पास आये तो उसके साथीने कहा—"तूने बच्चेको अपने हिस्सेमें लिया तो यह लबादा मुझे दे दे, ताकि हममें उचित हिस्सा-बाँट हो जाय।

मगर उसने जवाब दिया—"लबादा न मेरा है न तेरा, यह तो बच्चे-का है।"

इसपर उसका साथी नाराज़ हो गया और अपने घर चल दिया।

पहला लकड़हारा बच्चेको लेकर अपने दरवाज़ेपर पहुँचा। औरतने दरवाजा खोला और उसका मुसकुराकर स्वागत किया और खुद पीठपरसे लकड़ीका गट्ठर उतार लिया।

लकड़हारा बोला—"मैंने जंगलमे आज एक नायाब चीज पाई है और उसे तुझे सहेजने ले आया हूँ!"

"क्या लाये हो!" स्त्रीने उत्सुकतासे पूछा—"मुझे दिखाओ!"

"भगवान् तुम्हारा भला करे!" उसने कहा—"क्या हमारे बच्चे कम थे कि तुम और एक बच्चा ले आये! हम भला इसे कैसे पालेगी?" और वह नाराज होने लगी!

"मगर यह तो तारा-शिशु है!" उसने जवाब दिया—और उसने बताया कि कैसे अजब तरीकेसे यह बच्चा उसे मिला।

मगर इसपर भी वह शान्त न हुई और उसका मजाक उडाते हुए ग़ुस्सेमे बोली—"हमारे बच्चे भूखो मरेंगे और दूसरोके बच्चे पेट भरेंगे? कौन हमारी पर्वाह करता है? हमे कौन खाना देता है?"

"ईश्वर पशु-पछी तकका ध्यान करता है, हम तो खैर आदमी है!"

"मगर पशु-पछी भी जाडेमे अकडकर मर जाते है और आज कल जाडा ही तो है।"

लकडहारेने कोई जवाब न दिया और चुप-चाप बैठा रहा। जंगलकी ओरसे ठण्डी हवाका एक झोका आया और वह कॉंप गई।

दरवाज़ा क्यो नही बन्द कर देते। इतनी ठण्डी हवा आ रही है।"

"जिस घरके रहनेवालोका दिल सर्द हो जाता है वहाँ हमेशा सर्द बर्फानी झोके बहते हैं!" उसने कहा!

औरतने कोई जवाब न दिया वह महज आगके और नजदीक खसक आई। थोड़ी देर बाद वह मुडी और आँखोमें आँसू भरकर उसने अपने पतिकी ओर देखा। उसने जल्दीसे उठकर वह बच्चा उसकी गोदमे रख

दिया। लकडहारिनने उसे चूमा और अपने बच्चोंके खटोलेपर सुला दिया। दूसरे दिन लकडहारेने उस सुनहले लबादेको और बच्चेकी गर्दनमें पड़ी हीरेकी जंजीरको एक सन्दूकमें बन्द कर दिया।

इस तरह धीरे-धीरे तारा-शिशु उसी लकड़हारेके बच्चोंके साथ बडा हुआ। वह उन्हींके साथ खाना खाता था और उन्हींके साथ खेलता था। हर रोज़ उसका सौन्दर्य बढता जाता था। गाँववाले दग थे क्योंकि वे कुरूप और अनाकर्षक थे, जब कि ताराशिशु हाँथी-दाँतकी तरह गोरा था और उसके बाल सुनहले छल्लोंकी तरह थे, उसके होठ गुलाबकी पाँखु-ड़ियोंकी तरह थे और उसकी आँखें नरगिसकी तरह थी।

मगर उसका सौन्दर्य उसके लिए फायदेमन्द नहीं साबित हुआ। वह घमण्डी, स्वार्थी और क्रूर हो गया। वह लकडहारे तथा दूसरे देहातियों-के बच्चोंको नीची निगाहसे देखता था, क्योंकि वे छोटे खानदानके थे, जब कि वह खुद एक तारेकी सन्तान था। वह खुद उनका मालिक बन बैठा और उन्हें अपना नौकर समझने लगा। उसके मनमे गरीबोंके लिए कुछ भी रहम नहीं था और न वह अन्धे या लँगडे-लूलोंके प्रति ही कुछ भी सहानु-भूति करता था। वह उनपर पत्थर फेंकता था और उन्हे भगा देता था। वह अपनी ख़ूबसूरतीपर घमण्ड करता था और दूसरोंका मज़ाक उडाता था। वह गर्मियोंमें झीलके किनारे लेट जाता था और खुद अपना प्रति-बिम्ब देखकर खुशीसे हँस पडता था।

कभी-कभी लकडहारा और उसकी स्त्री उसे डाँटा करते थे और पूछते थे—"हम लोगोंने कभी तेरे साथ ऐसा बर्ताव नहीं किया जैसा तू दूसरोंके साथ करता है। तू क्यो उन लोगोंके साथ क्रूरताका व्यवहार करता है जिन्हें दयाकी ज़रूरत है।"

एक बार बुड्ढे पुरोहितने उसे जीवोंसे प्रेम करनेका उपदेश दिया—

"जानवरोमें तुम्हारी जैसी जान है। उनको कभी नुकसान न पहुँचाओ। चिड़ियोंकी आज़ादीमें कभी वाधा न पहुँचाओ। ईश्वरने हर जानवरको आजाद और खुश बनाया है, तुम्हे उनका दिल दुखानेका क्या हक है ?"

मगर ताराशिशु कभी उनकी वातोंपर ध्यान नही देता था, उन्हें मुँह चिढाकर वह वापस चला आता था और साथियोंपर हुकूमत चलाता था। उसके साथी उसका कहना मानते थे क्योंकि वह ख़ूबसूरत था, तेज़ दौड़ता था और सुरीला गाना गाता था। जहाँ कही ताराशिशु उन्हें ले जाता था, वे जाते थे और जो कुछ उनसे कहता था, वे करते थे। जव वह भिखारियोंपर पत्थर फेंकता था तो वे लोग भी हँसते थे। हर वातमे वह अपनी हुकूमत चलाता था और इसलिए वे भी उतने ही क्रूर वन गये।

एक दिन गाँवसे एक गरीव भिखारिन गुज़री। उसकी पोशाक फटी हुई थी, उसके पैरोसे ख़ून वह रहा था। वह इतनी थकी थी कि एक पेड़ के नीचे थककर वैठ गई।

किन्तु जव ताराशिशुने उसे देखा तो उसने अपने साथियोंसे कहा—"देखो उस छतनार पेड़के नीचे एक गन्दी भिखारिन वैठी हुई है। कितनी भद्दी है वह ! चलो उसे गाँवके वाहर खदेड़ आवें !"

वह उसके नज़दीक गया और उसपर पत्थर फेंकने लगा और मुँह चिढाने लगा। भिखारिनकी आँखोमे त्रासकी छाया थी और वह उसे एकटक देखने लगी। लकड़हारा ज़रा दूरपर लकड़ीके गट्ठर वाँध रहा था। जव उसने ताराशिशुकी करतूत देखी तो वह भागकर आया और उसे डाँटने लगा—तू कितना वेरहम है ? भला इस औरतने तेरा क्या विगाड़ा है जो तू इसे इस तरह सता रहा है ?"

ताराशिशु ग़ुस्सेसे लाल हो गया और पैर पटककर वोला—"तू

मुझसे यह सवाल पूछनेवाला कौन है ? मै तेरा लड़का थोडे ही हूँ जो यह रोब सहूँ !"

"ठीक है !" लकड़हारेने कहा—"मगर जब मैंने तुझे जगलमें पाया था तो मैंने तुझपर कितनी दया दिखलाई थी !"

और जब भिखारिनने यह वाक्य सुना तो वह चीख पड़ी और बेहोश हो गई। लकडहारा उसे घर ले गया और उसकी औरतने भिखारिनकी शुश्रूषा की जिससे उसे होश आ गया। उसके बाद लकडहारेने उनके सामने कुछ खानेका सामान रक्खा।

मगर उसने कुछ भी नही खाया-पीया और लकडहारेने कहा—"क्या तुमने यह बच्चा जंगलमें पाया था ? क्या यह दस साल पहलेकी बात है ?"

और, लकडहारेने कहा—"हाँ, मैंने दस साल पहले यह बच्चा जगलमे पाया था !"

"और इसके साथ क्या निशानी थी ?" भिखारिनने व्याकुल होकर पूछा—"क्या उसके गलेमें कोई जजीर थी ? क्या वह कोई जरीदार लबादा ओढ़े था ?"

"हाँ, बिल्कुल यही निशानी थी !" लकडहारेने कहा और उसके बाद उसने सन्दूकसे निकालकर दोनो चीजें उसे दिखलाई !

जब उसने वे दोनो चीजें देखी तो वह खुशीसे रोने लगी—"वह मेरा बच्चा है जिसे मै जगलमें छोड़ आई थी। जल्दी बुलाओ उसे मै उसकी खोजमें सारी दुनिया घूम आई हूँ !"

लकडहारा बाहर गया और ताराशिशुको बुलाकर उसने कहा—"घर चल। वहाँ तेरी माँ बैठी तेरा इन्तजार कर रही है !"

वह ताज्जुब और खुशीसे पागल होकर अन्दर दौड गया। मगर जब उसने उसे देखा तो वह नफरतसे बोला—"कहाँ है मेरी माँ ? यह तो वही भिखारिन है !"

"मैं तेरी माँ हूँ बेटा !" भिखारिनने प्यारसे कहा।

"छि:, तुम मेरी माँ हो—तुम कितनी गन्दी और ग़रीब हो ! मैं तुम्हारा लड़का नही हो सकता ! जाओ भागो यहाँ से !"

"नही बेटा तू मेरा ही लड़का है !" उसने घुटने टेककर बाहें फैलाकर कहा—"डाकुओंने तुझे चुराकर जंगलमे छोड़ दिया था। मगर तुझे देखते ही मैं पहचान गई और तेरी निशानियाँ भी मिल गई। तू मेरा ही बेटा है। भैया ! चल मेरे साथ, लाल ! मैं सारी दुनियामें तुझे खोज-खोज कर हार गई !"

मगर ताराशिशु अपनी जगहसे नही हिला। सारे कमरेमें सन्नाटा था महज़ उस औरतकी सिसकियाँ वातावरणमें गूँज रही थी।

और अन्तमें वह बोला—"अगर तू सचमुच ही मेरी माँ है तो भी अच्छा हो कि तू यहाँसे चली जा और मुझे शर्मिन्दा न कर क्योंकि मैं समझता था कि मै किसी भिखारिनको नहीं वरन तारोकी सन्तान हूँ। इसलिए तू यहाँसे चली जा।"

"हाय मेरे लाल ! तू कितना निर्मोही है।" भिखारिन बोली—"मैंने छातीपर पत्थर रखकर तुझे ढूँढ़ा है ! चलनेके पहले क्या तू मुझे चूमेगा भी नही !"

"मैं और तुझे चूमूँगा !—तेरे बजाय मैं किसी छिपकली या साँपको चूमना ज़्यादा पसन्द करूँगा !

भिखारिन उठी और सिसकते हुए जंगलकी ओर चली गई। ताराशिशु ने देखा कि वह चली गई तो वह बहुत ख़ुश हुआ और हँसते हुए अपने साथियोमें खेलने चला गया।

•

मगर जब उसके साथियोने उसे देखा तो वे मुँह चिढ़ाकर बोले—"अरे, तू तो छिपकलीकी तरह बदशकल और साँपकी तरह घिनौना है !

जा, भाग, हम लोग तेरे साथ नहीं खेलेंगे !" और उन्होंने उसे बगियासे बाहर भगा दिया।

ताराशिशु अचरजमें पड़कर सोचने लगा—"यह लोग ये क्या कह रहे हैं ? मैं अभी झीलमें जाकर अपनी परछाईं देखता हूँ !"

और जब उसने झीलके पानीमें झाँका तो उसने देखा कि उसका चेहरा छिपकलीकी तरह था और उसका बदन साँपकी तरह टेढ़ा हो गया था। वह घासपर लेट गया और रोने लगा, और बोला—"सचमुच यह मेरे पापोंका फल है। मैंने अपनी माँका अपमान किया और उससे घमण्ड और क्रूरताका वर्ताव किया। मैं जाऊँगा और सारे संसारमें उसे ढूँढ़ूँगा, बिना उसके प्यारके मुझे चैन नहीं मिलेगा।

इसी समय लकड़हारेकी लड़की आई और उसने प्यारसे कहा "क्या हुआ अगर तुम्हारा सौन्दर्य नष्ट हो गया ! तुम मेरे साथ रहो मैं तुम्हारी हँसी नहीं उड़ाऊँगी !"

और उसने उससे कहा—"नहीं, मैंने अपनी माताके साथ बेरहमीका व्यवहार किया है और यह शाप मुझे वास्तवमें उसीकी सजा है। मैं सारी दुनियामें उसे ढूँढ़ूँगा, उससे क्षमा माँगे बिना मुझे चैन नहीं मिलेगा !"

वह जंगलमें जाकर माँको पुकारने लगा मगर उसकी पुकारका कोई भी जवाब नहीं मिला। दिनभर वह चीखता रहा और जब शाम हुई तो वह ज़मीनपर लेट गया। सभी पशु-पक्षी उसपर हँसते हुए अपने घोंसलों-को चल दिये क्योंकि उसने हमेशा उन्हें सताया था। केवल छिपकलियाँ उसे देखती रहीं और साँप उसके पास रेंगते रहे।

सुबह होते ही उसने पेड़से तोड़कर कड़ुये बेर खाये और आगे चल दिया। रास्तेमें सबसे वह माँके बारेमें पूछता जाता था।

उसने चूहेसे पूछा—"तू तो ज़मीनके अन्दर जा सकता है, क्या मेरी माँ कहाँ है ?"

चूहेने जवाव दिया—"तूने पहले ही मेरी आँखें फोड़ दी अव मै तो देख भी नही सकता !"

उसने चीड़के पेडमें रहनेवाली छोटी गिलहरीसे पूछा—"तुम्हें मालूम है मेरी माँ कहाँ है ?"

गिलहरीने जवाव दिया—"तूने मेरी माँको तो मार डाला—क्या अव अपनी माँको भी इसीलिए ढूँढ रहा है ?"

ताराशिशु रो पड़ा और दिलमें उन सवसे क्षमा माँगते हुए आगे चल पडा। दूसरे दिन वह जंगल पारकर मैदानमे आ गया।

और, जव वह गाँवोंसे गुज़रता था तो वच्चे उसका पीछा कर और उस पर पत्थर फेंकते थे। लोग उसे सरायमे नही रुकने देते थे, किसान उसे खेतोसे नही गुजरने देते थे और दुनिया उससे नफरत करती थी ! तीन साल तक घूमते रहनेके वाद भी उसे उसकी माँ नही मिली। कभी-कभी वह उसे दूर सडकपर वैठी हुई दीख पड़ती थी, वह उसको पुकारकर पीछे दौड़ता था, उसके पैरमे कंकड़ चुभ जाते थे और खून वहने लगता था, मगर कभी भी वह अपनी माँके नज़दीक तक नही पहुँच पाता था। राहगीर इसे उसकी नजरोका धोखा वतलाते थे और उसका मज़ाक उड़ाते थे।

तीन साल तक वह सारी दुनियामें घूमता रहा मगर दुनियामे न प्यार था, न दया थी और न सहानुभूति। यह दुनिया वैसी ही थी जैसा कि वह अपने सौन्दर्यके जमानेमे था।

एक दिन शामको वह नदीके किनारे एक शहरके समीप आया जिसके चारों ओर एक मजवूत परकोटा था। वह थका और परेशान था मगर वह अन्दर गया। किन्तु द्वार-रक्षक सिपाहियोंने भाले अड़ाकर उसे रोक दिया और पूछा—"तू क्यो शहरमे जाना चाहता है ?"

मैं अपनी माँको ढूँढ रहा हूँ ! तुम लोग मुझे अन्दर जाने दो। सम्भव है वह यहीं हो।" उसने जवाब दिया।

मगर वे लोग उसपर हँसने लगे। उनमेंसे एक अपनी ढाल नीचे रख कर बोला—"सच तो यह है कि अगर तेरी माँ तुझे देखेगी तो भी खुश न होगी, क्योंकि तू गन्दी छिपकलियोंसे ज्यादा बदसूरत और साँपोंसे ज्यादा घिनौना है। जा भाग यहाँसे ! तेरी माँ इस शहरमें नहीं है !'

जब वह रोते हुए वापस जा रहा था तो एक व्यक्ति जिसके हथियारों पर फूल बने थे और जिसके शिरस्त्राणपर पखदार शेर बने थे, आया और द्वाररक्षकोंसे पूछने लगा कि कौन अन्दर आना चाहता था। उन्होंने कहा—"वह एक भिखमंगा लडका था और हम लोगोंने उसे भगा दिया।"

"नहीं !" वह हँसते हुए बोला—"उसे पकड़कर बेच दो। उसके दामोंसे कमसे कम हमारी शराबका इन्तजाम हो जायगा।"

और एक बुड्ढा और खूँखार आदमी जो बगलसे गुजर रहा था, बोला कि—"मैं उसे खरीद लूँगा !" और सचमुच वह उतना दाम देकर ताराशिशुको अपने साथ घसीट ले गया।

कई सडकोंसे गुजरनेके बाद वह एक मकानके सामने पहुँचा जिसके सामने एक अनारका पेड़ था। बुड्ढेने एक हीरेकी अँगूठीसे दरवाजा छुआ और वह खुल गया। उसने देखा कि बादमें ५ ताँबेकी सीढ़ियाँ उतरनेके बाद एक बाग था जिसमें गेरुवे गमलोंमें पोस्तके फूल लगे थे। उसके बाद बुड्ढेने एक छायेदार रेशमी रूमालसे ताराशिशुकी आँखें बाँध दीं और तब उसे आगे ले चला। जब रूमाल खोला गया तो उसने देखा कि वह एक तहखानेमें है।

बुड्ढेने उसे कुछ खाना दिया और एक प्यालेमें पानी। जब वह खा-पी चुका तो बुड्ढा बाहरसे ताला बन्द कर चला गया।

बुड्ढा वास्तवमें लीबियाका मशहूर जादूगर था और उसने मिस्रके मकबरोंमें रहनेवाले पीरोंसे जादू सीखा था। उसने कहा—' शहरके पास-

के एक जगलमें सोनेके तीन टुकडे है—सफेद, पीला और लाल। जा और जाकर सफेद टुकडा उठा ला। अगर तू उसे आज नही ला सका तो मै तुझे सौ कोडे लगाऊँगा। मै बाग़के दरवाज़ेपर तेरा इन्तज़ार करता रहूँगा।" और उसने उसकी आँखोमें छायेदार रेशमी रूमाल बाँधकर पोस्तके बाग और ताम्बेकी सीढियोपर घुमाते हुए घरसे निकाल दिया।

ताराशिशु शहरके बाहर गया और जादूगरके बताये हुए जगलमें पहुँचा।

बाहरसे देखनेपर यह जंगल बहुत ही आकर्षक लगता था। उसमे महकदार फूल थे, सुरीली आवाज़वाली चिड़ियाँ थी—ताराशिशु खुशीसे उसके अन्दर गया! मगर फिर भी जगलके सौन्दर्यका उसे कुछ आनन्द नही मिल पाया, क्योकि जहाँ वह जाता था ज़मीनसे काँटे उभर आते थे और चुभ-चुभकर उसे परेशान कर डालते थे। न उसे कही भी वह सफेद सोनेका टुकडा ही मिला जिसे वह सुबहसे दोपहर और दोपहरसे शाम तक ढूँढता रहा—शामके वक़्त वह शहरकी ओर रोते हुए मुडा क्योंकि वह जानता था कि क्या सज़ा मिलनेवाली है।

मगर जब वह जंगलके किनारे पहुँचा तो उसने दर्दकी तेज चीख सुनी और वह फौरन अपना दर्द भूलकर वहाँ पहुँचा। उसने देखा कि एक खरगोश किसी शिकारीके जालमे फँस गया है।

ताराशिशुको उसपर रहम आ गया और उसने उसे आज़ाद करते हुए कहा—"मै गुलाम भले ही होऊँ मगर मै तुम्हें ज़रूर आज़ाद कर दूँगा।"

और खरगोशने उसे जवाब दिया—"सचमुच तूने मुझे आज़ाद किया, मै तेरे लिए क्या कर सकता हूँ?"

ताराशिशुने उससे कहा—"मैं एक सफेद सोनेका टुकड़ा ढूँढ़ रहा हूँ मगर मुझे नही मिला। और अगर वह मुझे नही मिलेगा तो मेरा मालिक मुझे बहुत मारेगा!"

"मेरे साथ आ, मैं तुम्हें वह सोनेका टुकड़ा दूंगा !"

वह खरगोशके साथ गया और लो, एक शहवलूतके कोटरमें सफेद सोनेका टुकड़ा रक्खा था। वह खुशीसे उछल पड़ा और खरगोशसे बोला—"जो मैंने तेरे लिए किया उससे कहीं ज्यादा तूने मेरे लिए किया है—मैं तेरा बहुत-बहुत कृतज्ञ हूं !"

"नहीं, ऐसी क्या बात है !" खरगोशने जवाब दिया—"तूने मेरे साथ जो किया था, मैंने भी अपना फर्ज समझकर वही किया !" और उसके बाद खरगोश भाग गया।

शहरके दरवाज़ेपर एक बीमार फकीर बैठा था। जब उसने तारागिशु-को आते हुए देखा तो उसने अपना लकडीका प्याला खडकाया। उसको पुकारकर कहा—"मुझे पैसा दो बाबू—मैं भूखसे मर रहा हूं। लोगोंने मुझे शहरसे निकाल दिया, किसीने मुझपर दया नहीं की !"

"अफसोस ! मेरे पास केवल एक सोनेका टुकडा है और अगर मैं वह तुझे दूंगा तो मेरा मालिक मुझे मारेगा !"

मगर भिखारीने उससे मिन्नत की तो तारागिशुने उसे वह टुकड़ा दे दिया।

जब वह जादूगरके घर आया तो अन्दर आकर जादूगरने पूछा—"क्या तुम वह सोनेका टुकडा लाये हो ?" जब उसने जवाब दिया "नहीं !" तो जादूगरने उसे बेहद मारा और ख़ाली प्याला उसके सामने रखकर कहा—"लो खाओ" और खाली गिलास रखकर कहा—"लो पियो !" और फिर उसे तहख़ानेमें बन्द कर दिया।

दूसरे दिन जादूगर आया और बोला—"अगर आज तू पीले सोनेका टुकड़ा नहीं लाया तो मैं तुझे ३०० कोड़े मारूंगा !"

तारागिशु जंगलमें गया और दिनभर उसने सोनेका टुकड़ा ढूंढा मगर

शाम हो गई और वह असफल रहा। शामके वक्त वह एक डालसे टिककर रोने लगा। इतनेमें वह खरगोश दीख पड़ा।

"तू क्यों रो रहा है ?" उसने पूछा—

"मैं एक पीले सोनेका टुकड़ा ढूँढ़ रहा हूँ और अगर मुझे वह नहीं मिलेगा तो मेरा मालिक मुझे बहुत मारेगा !"

"मेरे साथ आओ !" खरगोशने कहा और वह उसे एक तालाबके किनारे ले गया जिसके तलेमे सोनेका टुकड़ा रक्खा था।

"ओह ! मै तुम्हें कैसे धन्यवाद दूँ !" ताराशिशुने कहा।

"कुछ नहीं ! पहले तुम्हींने मेरी जान बचाई थी !" खरगोश कहकर भाग गया।

ताराशिशुने वह पीले सोनेका टुकड़ा लिया और घर चला। रास्तेमे दरवाज़ेपर वही फकीर बैठा था। वह दौडा और उसने अपना प्याला फैला दिया। ताराशिशुने कहा—"मेरे पास एक ही सोनेका टुकड़ा है। अगर मैं उसे घर नही ले जाऊँगा तो जादूगर मुझे बहुत मारेगा।" मगर फ़क़ीर गिड़गिड़ाता रहा और ताराशिशुने उसे वह टुकड़ा दे दिया।

जब वह घर पहुँचा तो जादूगरने उसे अन्दर लाकर पूछा—"क्या तू सोनेका टुकड़ा लाया है ?"

"नही" ताराशिशुने जवाब दिया—जादूगरने उसे बहुत मारा और जंजीरोंमें कसकर तहखानेमें बन्द कर दिया।

दूसरे दिन जादूगर फिर उसके पास आकर बोला—"अगर तू आज लाल सोनेका टुकड़ा ला देगा तो मैं तुझे आजाद कर दूँगा वरना मैं तुझे मार डालूँगा !"

ताराशिशु जंगलमें गया और दिन-भर उस सोनेके टुकड़ेकी खोज करता रहा। मगर शामको भी जब उसे कुछ न मिला तो वह बैठकर रोने लगा। उसी वक्त खरगोश आ गया।

"ओह ! तू जिस सोनेके लिए रो रहा है वह तेरे ही पासकी खोहमें रक्खा है !"

"आह ! मैं तुझे कैसे धन्यवाद दूँ । तूने आज मुझे तीसरी बार सहायता दी है !"

"कुछ नही ! तूने पहले मुझपर दया की थी !" खरगोश बोला और भाग गया !

ताराशिशुने खोहसे सोना निकाला और शहरकी ओर चल दिया । जब फकीरने उसे आते हुए देखा तो वह फाटकके बीचो-बीच खड़ा होकर बोला—"मुझे कुछ दो मालिक ! वरना मैं भूखो मर जाऊँगा !"

ताराशिशुने वह लाल सोना उसके प्यालेमे डाल दिया और कहा—"तुम्हारी जरूरत मेरी जरूरतसे बडी है !" मगर वह मन-ही-मनमे अपनी जिन्दगीसे मायूस हो चुका था ।

किन्तु लो ! ज्यो ही वह फाटकसे निकला द्वारपालोंने उसे झुककर नमस्कार किया और कहा—"हमारा मालिक कितना सुन्दर है !" नागरिकों-की एक भीड़ उसके पीछे लग गई और बोली—"सचमुच दुनियामें कोई इससे ज्यादा सुन्दर नही है !"

ताराशिशु रोने लगा और बोला—"ये लोग मुझपर व्यग्य कस रहे है !" भीड इतनी ज्यादा बढ गई थी कि वह राह भूल गया और एक राजमहलके पास पहुँच गया ।

राजमहलके फाटक खुले और राज्याधिकारी और पुरोहित उसके स्वागतके लिए निकल आये—"आप हमारे मालिक हमारे राजकुमार हैं जिनकी हमलोग इतने दिनोंसे प्रतीक्षा कर रहे थे ।"

ताराशिशुने उन्हे जवाब दिया—"मैं राजकुमार नहीं, एक भिखारिन-

की सन्तान हूँ। तुम कहते हो मै सुन्दर हूँ, मेरी वदसूरतीका मजाक मत उड़ाओ!"

वह व्यक्ति, जिसके हथियारोपर फूल और गिरस्त्राणपर उड़न-शेर वना था, वोला—"आप कैसे कहते है कि आप वदसूरत है?"

और ताराशिशुने उसकी आँखोमे अपनी छवि देखी। उसका सौन्दर्य वापस आ गया था।

पुरोहित और अधिकारीगण उसके सामने झुके और वोले—"यह भविष्य वाणी थी कि आजके दिन साकार सौन्दर्य हमपर राज करने आयेगा। आप यह मुकुट लीजिए और यह राजदण्ड, और हमपर राज कीजिए!"

मगर वह वोला—"मै इस योग्य नही हूँ। मैंने अपनी जननीका अपमान किया है और जवतक मै उसे ढूँढ़ नही लूँगा तवतक मुझे चैन नही मिलेगा। तुम मुझे मुकुट और छत्र दे रहे हो मगर मै सारी दुनिया घूमकर उसे ढूँढूँगा और उससे क्षमा मागूँगा।" और इतना कहनेके वाद ज्योंही उसने फाटककी ओर सर घुमाया तो देखा कि भीड़मे उसकी भिखारिन माँ खड़ी है और उसके वगलमे वही फ़कीर खड़ा है।

वह खुशीसे चीख पड़ा और दौडकर माँके पैरोपर पड गया और अपने आँसूसे उसके जख्म भिगोने लगा।

"माँ!" उसने सिसकते हुए कहा—"माँ, घमण्डके क्षणोमे मैंने तुम्हे ठुकराया, आज मै तुम्हारे स्नेहकी भीख माँग रहा हूँ। मैंने तुम्हे तिरस्कार किया, तुम मुझे वात्सल्य दो!" मगर भिखारिन कुछ नही वोली।

वह दौड़कर फ़कीरके पैरपर गिरकर वोला—"मैंने तीन वार तुमपर दया की, आज तुम मेरी माँको मना दो!" मगर फ़कीर भी कुछ नही वोला!

वह फिर सिसकता हुआ वोला—"माँ, अव मुझसे नही सहा जाता। मुझे क्षमा कर दो, माँ!"

भिखारिनने उसके सिरपर हाथ रक्खा और कहा "उठो !"—फ़कीरने उसके सिरपर हाथ रक्खा और कहा—"उठो !" और वह उठकर खड़ा हुआ और उसने देखा—एक राजा और रानी खड़े है ।

और रानीने कहा—"यह तेरे पिता हैं जिसपर तूने दया की थी !"

और राजाने कहा—"यह तेरी माँ हैं जिसके जख्मोंको तूने आँसुओंसे धोया है !"

उन्होंने उसका मस्तक चूमा और वे उसे महलमें ले आये । उन्होंने उसे सुन्दर पोशाक पहनायी, उसके माथेपर मुकुट रक्खा, उसके हाथमें राजदण्ड दिया और वह उस शहरका राजा हो गया । उसने दयाका शासन किया, प्रजाको सन्तुष्ट रक्खा और लकड़हारेके परिवारको बड़ा आदर और धन दिया । उसने दया और प्रेमका उपदेश दिया । भूखोंको रोटी और नंगोंको कपड़ा दिया और देशमें सुख-शान्तिकी स्थापना की ।

मगर उसपर इतने दुःख पड चुके थे और उनके कारण वह इतना टूट चुका था कि तीन सालमें ही मर गया, उसके बाद जो राजा आया उसने वही अत्याचार करने शुरू कर दिये ।